**श्री बागड़ी** (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, कुछ कायदे, कानून के मुताबिक होगा ?

**अध्यक्ष महोदय** : क्या आप का कायदा, कानून चलेगा ?

**श्री बागड़ी** : नहीं, चलेगा तो आपका ही लेकिन...

**अध्यक्ष महोदय** : नहीं मैं इस तरीके से यहां नहीं सुनूंगा ।

---

**12.03 hrs.**

## BUSINESS OF THE HOUSE

**Mr. Speaker:** Shri Satya Narayan Sinha.

**The Minister of Parliamentary Affairs and Communications (Shri Satya Narayan Sinha):** Mr. Speaker, Sir, the House is already aware of the order in which Demands for Grants of the various Ministries will come up before the Lok Sabha for discussion and voting..... *(Interruptions)*.

**डा० राम मनोहर लोहिया** (फर्रुखाबाद): आदिवासियों का मामला है...

**अध्यक्ष महोदय** : आर्डर, आर्डर ।

**डा० राम मनोहर लोहिया** : दुर्भिक्ष का मामला है । इस पर आप सोच विचार करिये (व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदय** : आर्डर, आर्डर । मन्त्री जी पढ़ें ।

**श्री सत्यनारायण सिंह** : पढ़ूं कैसे उसको कोई सुनने वाला नहीं है । I place it on the Table of the House.

**श्री भागवत झा आजाद** (भागलपुर) : वो को छोड़ कर हम सब लोग सुनने वाले हैं ।

**Shri Satya Narayan Sinha:** Mr. Speaker, Sir, the House is already aware of the order in which Demands for Grants of the various Ministries will come up before the Lok Sabha for discussion and voting. It was suggested to me in the Business Advisory Committee yesterday that the outstanding Demands may be put to vote of the House at 2 P.M. on Friday, the 29th of April, 1966. In deference to the wishes of the members of the Business Advisory Committee and of different sections of the House, I hope you and the House would agree that the outstanding Demands may be put to the vote of the House on Friday, the 29th, at 2 P.M. After the voting of the Demands the House will take up considerations and passing of the Finance Bill, 1966.

As you are aware, Sir, the House approved the recommendation of the Business Advisory Committee on 10th March, 1966, to sit on Saturday, the 30th April. I had promised that I will give firm indication to the House about the extension of the session. In the light of discussions in the Business Advisory Committee yesterday, the Government propose that the Lok Sabha may have three extra sittings —on Saturday, the 14th of May, and Monday and Tuesday, the 16th and 17th of May, 1966. The extended sittings would enable the House to transact important legislative and non-legislative business and also to take up some No-Day-Yet-Named Motions out of those recommended by the Business Advisory Committee.

**Mr. Speaker:** Now, Dr. Ram Manohar Lohia.

**Shri Hari Vishnu Kamath** (Hoshangabad): I want to say something on the statement made by the hon. Minister.....

**Mr. Speaker:** When the hon. Minister comes forward with a motion for adoption of the report of the Business Advisory Committee, then the hon. Member can speak on that. That will be about the same thing.

**Shri Hari Vishnu Kamath:** Usually, you allow us to make some suggestions at the time the statement is made.

**Mr. Speaker:** But the hon. Minister is again coming before the House for the adoption of the report. All these things could be said then.

**श्री बागड़ी** (हिसार) : भुखमरी का विषय बहस में आना चाहिए ।

**अध्यक्ष महोदय** : इस वक्त नहीं जब वह बिजनैस का काम आयेगा तब देख लिया जायगा ।

**श्री बागड़ी** : बहुत दिनों से आपने प्रस्ताव मंजूर कर रक्खा है डा० लोहिया का. .

**अध्यक्ष महोदय** : इस वक्त नहीं जब स्टेट्मेंट आता है तब आप करिये । डा० राम मनोहर लोहिया अपना बयान पढ़ दें ।

---

12.05 hrs.

## STATEMENTS ABOUT CIRCUMSTANCES IN WHICH SHRI LAL BAHADUR SHASTRI DIED

**डा० राम मनोहर लोहिया** (फर्रुखाबाद) : माननीय अध्यक्ष महोदय, विदेश मन्त्री जी ने जो बयान 16 फरवरी को लोक-सभा में प्रधान मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के सम्बन्ध में दिया, उनकी कुछ असत्य बातों की तरफ़ ध्यान खींचने की मुझे अनुमति दीजिए ।

विदेश मन्त्री जी ने कहा था कि प्रधान मन्त्री जी के कमरे में बजर समेत टेलीफोन था जिसको सिर्फ उठाते ही डाक्टर या उनके कर्मचारियों के कमरों में घंटी बजने लगती थी । सवाल-जवाब में अध्यक्ष महोदय ने खुद पूछा । 'एक सवाल जो यहां बहुत संगत है, यह है कि क्या इसकी जांच की गयी कि घंटी व्यवस्थित रूप से काम कर रही थी. . .' इस पर विदेश मन्त्री जी ने जवाब दिया 'यह बहुत महत्वपूर्ण सवाल है । इसकी जांच की गयी थी और वह काम कर रही थी. . .' विदेश मन्त्री जी ने घंटी समेत टेलीफोन की बात बार-बार दोहराई, न सिर्फ यह कि ऐसा टेलीफोन था बल्कि यह कि मौत के बाद जांच करने पर घंटी ठीक काम कर रही थी । मैंने प्रधान मन्त्री जी के शव समेत बिछौने के और उसकी चारों तरफ़ की जगह के फोटो देखे हैं । एक मेज़-लैम्प ज़रूर देखी बाक़ी किसी तरफ़ कुछ नहीं । बिछौने में भी कहीं कुछ लगा हुआ नहीं देखा । अगर कोई कहे कि फोटो लेते समय टेलीफोन हटा दिया गया और लैम्प छोड़ी गयी तो उस बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा । मुझे अब तक अचरज है कि ऐसा असत्य क्यों बोला गया । अगर कोई भारी रहस्य नहीं है तो मालूम होता है विदेश मन्त्री जी ने इस असत्य से भारत और इस सरकार की लापरवाही को ढांपना चाहा था । अगर कोई रहस्य नहीं है, तो हर हालत में इतना साफ़ है कि प्रधान मन्त्री जी की जिन्दगी की वैसी ही रक्षा हुई जैसी करोड़ों गरीब लोगों की । जैसे साधारण आदमी हमारे देश में करीब-करीब लावारिस मरता है वैसे ही उसका प्रधान मन्त्री भी ।

प्रधान मन्त्री जी की मौत की डाक्टरी रपट पर सात डाक्टरों के दस्तखत हैं । सर्व श्री चुग, आरिपाव, गार्डन, पावलोवा, राखिम जानोव, तुरसुन खोजेवा, उमीदोवा । ये कहते हैं कि शास्त्री जी "करीब साढ़े बारह बजे सोने गये । 11 जनवरी को सुबह करीब एक बज कर 20 मिनट पर श्री सहाय, कपूर और शर्मा प्रधान मन्त्री के डाक्टर के यहां गये जो बगल के कमरे में थे और उनको कहा कि प्रधान मन्त्री की तबीयत खराब है ।" डाक्टर चुग ने प्रधान मन्त्री को "बिछौने पर बैठे पाया और सांस लेने में तकलीफ़ की शिकायत करते" जाहिर है कि यह रपट मौत के कुछ ही देर बाद लिखी गयी । घटनाओं में ज्यादा हेर-फेर नहीं किया जा सका । इतनी बात